# गांधी वचनामृत

● संकलनकर्ता – सुनील शर्मा

# गांधी वचनामृत

**संकलनकर्ता:**

सुनील शर्मा

**प्रकाशक:**

मुंबई सर्वोदय मंडल

# प्रकाशकीय

गांधीजी का ध्येय देश के लिये स्वतंत्रता प्राप्ति का तो था ही पर उससे आगे जाकर वे देश का भौतिक और आध्यात्मिक विकास करना भी चाहते थे. उन्होंने इसके लिये व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तर पर उपाय सूझाये थे. उनका व्यक्तित्व विविधरंगी था. जीवन का कोई भी पहलू या क्षेत्र ऐसा नहीं था, जिसमें उनको दिलचस्पी न हो.

साथी सुनील ने गांधी साहित्य का गहरा अध्ययन करके, प्रार्थना, सेवा, मौन आदि व्यक्तिगत गुणों से लेकर, जाति, अस्पृश्यता, स्वदेशी, समाजवाद, ट्रस्टीशीप, लोकतंत्र, पंचायत राज आदि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर लिखित उनके लेखों के उद्धरणों का चयन करके सूत्ररूप में हमारे सामने रखकर, बापू के १२५ जन्मजयंती के वर्ष में उनका सच्चा तर्पण किया है, जिसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं.

बापू को उन्ही के शब्दों द्वारा प्रस्तुत करने के इस सार्थक प्रयास से उनके बारे में फैलायी जा रही गलतफहमियाँ दूर होंगी और साथ-साथ पाठक यह भी समझ सकेंगे कि विश्व के प्रमुख वैज्ञानिक और समाजशास्त्री क्यों यह कह रहे हैं कि गांधीजी के सिद्धांत सांप्रतकाल के लिये अप्रस्तुत नहीं है. इतना ही

नहीं अपितु गांधीदर्शन ही आज की भयत्रस्त और हिंसाग्रस्त दुनिया को बचाने का एकमात्र रामबाण इलाज हैं.

**डॉ. उषा मेहता**

गांधी बुक सेंटर
मुम्बई सर्वोदय मंडल,
२९९ ताडदेव रोड,
नाना चौक, मुंबई ४०००० ७

# गांधी के शब्द !

गांधी के शब्द, जिन्होंने एक अनोखे आंदोलन को रूप दिया, परिपुष्ट किया और सफलता तक पहुंचाया, ऐसे शब्द जिन्होंने संख्यातीत व्यक्तियों को प्रेरणा दी और प्रकाश दिखाया... ऐसे शब्द, जिन्होंने जीवन का एक नया ढंग खोजा और दिखाया... ऐसे शब्द, जिन्होंने उन सांस्कृतिक मूल्यों पर जोर दिया, जो आध्यात्मिक और सनातन हैं, समय और स्थान की परिधि से परे हैं और संपूर्ण मानवजाति तथा सब युगों की संपत्ति हैं, उन शब्दों की चमक दर्पण के समान है, जिसमें कोई भी व्यक्ति खुद को देख सकता है, पहचान सकता है, सुधार सकता है...

# विषय सूची

१. प्रार्थना

२. ईश्वर

३. सत्याग्रह

४. सार्वजनिक जीवन

५. अस्पृश्यता

६. धर्म

७. मातृभाषा : हिन्दी

८. छात्र : शिक्षा : ज्ञान

९. राष्ट्र

१०. जाति

११. ट्रस्टीशिप

१२. व्यापार

१३. स्त्री

१४. शराब

१५. संगठन

१६. साधु

१७. अहिंसा

१८. किसान

१९. स्वदेशी

२०. समाजवाद

२१. अनुशासन

२२. पत्रकारिता

२३. पंचायत राज

२४. क्रांति

२५. सत्य

२६. उपवास

२७. मनुष्य

२८. प्रेम

२९. स्वास्थ्य + आहार

३०. लोकतंत्र

३१. शांति

३२. सेवा

३३. सुख

३४. सभ्यता

३५. दोष

३६. परिश्रम

३७. मौन

३८. गुण

३९. विविध

# प्रार्थना

- प्रार्थना याचना नहीं, आत्मा की पुकार है.
- प्रार्थना आत्मशुद्धि का सहज और सरल साधन है.
- प्रार्थना द्वारा ईश्वर की कृपा और सहायता से हम अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं.
- प्रार्थना में असीम शक्ति है.
- प्रार्थना में तल्लीन हो जाना असली उपासना है.
- भ्रमित विचार की शुद्धि के लिए हार्दिक प्रार्थना एक जीवंत जड़ी है.
- प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे, अधिक शुद्ध होने की आतुरता को सूचित करती है. प्रार्थना किसी नाम से की जा सकती है.
- एक बहन ने कहा "मैं प्रार्थना करती थी, अब छोड़ दी है." मैंने पूछा "क्यों?". उन्होंने उत्तर दिया "क्योंकि मैं दिल को धोखा देती थी". उत्तर तो ठीक ही है लेकिन धोखा देना छोड़ें, प्रार्थना क्यों छोड़ें?
- जगह की सफाई जिस प्रकार झाड़ू और बाल्टी की मदद से होती है, उसी प्रकार मन की शुद्धि प्रार्थना से होती है.
- प्रार्थना नम्रता की पुकार है.
- प्रार्थना आत्मा को साफ करने की झाड़ू है.

# ईश्वर

- भगवान ने इन्सान को अपनी ही तरह बनाया, पर दुर्भाग्य से इन्सान ने भगवान को अपने जैसा बना डाला.
- ईश्वर प्रकाश है, अंधकार नहीं; वह प्रेम है, घृणा नहीं; वह सत्य है, असत्य नहीं.
- जब तक ईश्वर हमारी रक्षा करता है, मारने वाला कितना भी बलवान हो, मार नहीं सकता.
- लाखों भूखों के लिए अगर आप भोजन ले जायें तो वे आपको अपना ईश्वर मानेंगे.
- ईश्वर न काबा में है, न काशी में वह तो घर-घर में व्याप्त है - हर दिल में मौजूद है.
- जब मनुष्य अपने को रज-कण से भी छोटा मानता है, तब ईश्वर उसकी मदद करता है.
- मानवता की सेवा द्वारा ही ईश्वर से साक्षात्कार का प्रयत्न मैं कर रहा हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि ईश्वर न तो स्वर्ग में है और न पाताल में, वह तो हर हृदय में है.
- भगवान न मंदिर में है, न मस्जिद में, न भीतर है न बाहर. कहीं है तो दीन जनों की भूख और प्यास में है.

- ईश्वर के बाहर हमारी कोई हस्ती ही नहीं है.
- सत्य अंतर में ढूंढने से मिलता है, दलील से, संवाद से कभी नहीं. सत्य के बदले में ईश्वर पढ़ो तो एक ही बात है.
- ईश्वर हरेक के हृदय में है और इस कारण हरेक हृदय ईश्वर मंदिर है. तो हम किसका तिरस्कार करें?
- जो ईश्वर को याद करता है वह दूसरा सब भूल सकता है. जो दूसरा सब याद रखे और ईश्वर को भूले, उसने कुछ याद नहीं किया है.
- जो आदमी अपने मनुष्यत्व को समझता है, जो ईश्वर से डरता है, वह और किसी से नहीं डरता.
- अगर ईश्वर जैसी कोई भी शक्ति इस जगत में है तो हमें चिंता करने का कोई कारण नहीं है.
- जो आदमी सबकी पगधूली होता है, वह ईश्वर के नजदीक है.
- ईश्वर तो एक ही है और हमेशा एक रूप या अरूप है. हम उसका आईना हैं. अगर हम सीधे हैं तो वह सीधा दीखता है, हम टेढ़े हैं तो वह भी टेढ़ा लगता है. इसलिए हम हर तरह स्वच्छ ही रहें.
- यदि आप कर्म नहीं करते और केवल तथाकथित भक्ति करते हैं तो उसका परिणाम भी एकतरफा होगा.
- आप जिस ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, क्या आप उसे जानते हैं? मैं नहीं जानता, वह आपके और मेरे लिए अज्ञात है.

- परमेश्वर पर विश्वास रखना सबसे आसान होना चाहिए, लेकिन सबसे कठिन वही दिखता है.
- गुरु संपूर्ण होना चाहिए और वह तो ईश्वर ही है.
- एक के पास ईश्वर है, करोड़ के पास शैतान हैं, तो एक करोड़ से डरें? माना कि दोनों के साथ ईश्वर है तो कौन किससे डरे?
- जो ईश्वर को भूलता है वह अपने को भूलता है.
- रामनाम की शक्ति की भी मर्यादा है. क्या कोई चोर रामनाम से कामयाबी हासिल कर सकता है?
- ईश्वर सर्वत्र है. इसीलिए वह हमसे पत्थर, वृक्ष, जंतु, पक्षी इत्यादि के मार्फत बोलता है.
- शरीर केवल ईश्वर के रहने या आत्मा को पहचानने का घर है.
- जो ईश्वर को साथ रखकर कुछ सोचता है, बोलता है, करता है वह सच्चा करने से कभी शर्मिंदा नहीं होगा.
- देव का कोई नाम न हो, लेकिन उसमें देव के गुण हों तो हम उसे अवश्य नमस्कार करें.
- जो तेरे में ही है, उसे बाहर कहां ढूंढता है?
- ईश्वर हमारा सुकान (पतवार) है और नाखुदा (खेवनहार) भी.

- ईश्वर के नाम तो अनेक हैं लेकिन एक ही नाम ढूढें तो वह है सत्-सत्य! इसलिए सत्य ही ईश्वर है.
- सत्य के दर्शन बगैर अहिंसा के हो ही नहीं सकते.
- वही धनवान हैं जिसके साथ भगवान है.
- जहां गरीबों के लिए शुद्ध और सक्रिय प्रेम है, वहां ईश्वर है.
- खुदा की निगाह में गरीबों की खिदमत करनेवाले का दर्जा ऊंचा है.
- भगवान जरूरत से ज्यादा कुछ नहीं बनाता है.
- ईश्वर की कृपा, ईश्वर के काम करने से आती है.
- आप ईश्वर की तलाश में धरती पर इधर-उधर न भटकें.
- हम तो विधाता के हाथों के खिलौने भर हैं.
- खुदा जबान की गलती को थोड़े देखता है? वह तो दिल की सफाई को ही देखता है.
- हम सोते हैं तब,भी ईश्वर हमारी चौकसी करता है.
- रामनाम कंठ से नहीं, हृदय से निकालना है.

# सत्याग्रह

- सत्याग्रह का यह अर्थ लिया गया है कि विरोधी को पीड़ा देकर नहीं, बल्कि स्वयं कष्ट उठाकर सत्य की रक्षा करना.
- सत्याग्रही सबका मित्र होता है, शत्रु किसी का नहीं होता.
- यह याद करना चाहिए कि सत्याग्रह अगर संसार की सबसे बड़ी ताकत है, तो इसके लिए दिल में क्रोध और दुर्भाव रखे बगैर अधिक-से-अधिक कष्ट सहन की क्षमता की आवश्यकता है.
- सत्याग्रह की जड़ मनुष्य स्वभाव पर विश्वास रखने में है.
- शक्ति और अधिकार छीनने के लिए जो सत्याग्रह किया जाता है, वह सत्याग्रह नहीं, दुराग्रह है.
- सत्याग्रही में सत्य का आग्रह, सत्य का बल होना चाहिए.
- हिंसा के संपूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गयी है.
- सत्याग्रह में शारीरिक बल का प्रयोग नहीं है.
- सत्याग्रही शत्रु को कष्ट नहीं देता.
- कष्ट सहकर कष्टों से मुक्त होने का नाम सत्याग्रह है.
- सत्याग्रह विशुद्ध आत्मिक शक्ति है.
- सत्याग्रह में द्वेष के लिए कोई स्थान नहीं है.

- सत्याग्रही हमेशा बलवान होता है, उसमें भीरुता की गंध तक नहीं आती.
- सत्याग्रह का अर्थ है नम्रता की पराकाष्ठा!
- धन की लालसा और सत्याग्रह साथ-साथ नहीं चल सकती.
- सत्याग्रही तो पराजय जानता ही नहीं.

# सार्वजानिक जीवन

- लोकसेवा-भाव से सार्वजनिक सेवा करना, तलवार की धार पर चलने के समान है.
- शुद्ध धर्ममार्गी लोकसेवा को अपनाये बिना रह ही नहीं सकता.
- ज़ो नियमों को जानता नहीं है और उनका पालन नहीं करता है, वह लोकसेवक हो ही नहीं सकता.
- सार्वजनिक प्रवृत्ति में संलग्न व्यक्ति ने यदि दुख की बात सुनने की शक्ति प्राप्त नहीं की है, तो उसने कुछ भी प्राप्त नहीं किया, ऐसा कहा जा सकता है.
- कार्य के बिना आस्था निष्प्राण है, आस्था के बिना कार्य भी निष्प्राण है.
- कार्य वाणी से अधिक मुखर होता है.
- सुधारक कभी समय से हार नहीं मानता.
- जो चीज लाखों को नहीं मिलती, उसे लेने से हम इंकार कर दें.

# अस्पृश्यता

- अगर आत्मा एक है और ईश्वर एक है, तो फिर अछूत और अस्पृश्य कोई हो ही नहीं सकता.
- अस्पृश्यता से हिंदू धर्म ऐसे ही चौपट हो रहा है, जैसे संखिया से दूध.
- यूं तो माता भी जब तक बच्चे का मैला उठाकर न नहाये या हाथ-पैर न धोये, तब तक अछूत है.
- जहां अस्पृश्यता की भावना आ गयी, मानवता वहां से विदा हो जाती है.
- अस्पृश्य वह है, जो झूठ बोले और पाखंड करे.
- अगर अस्पृश्यता टिकी रही तो हिंदू धर्म जीवित नहीं रहेगा.
- जो जमीन पर बैठता है उसे कौन नीचे बिठा सकता है?
- जो सबका दास बनता है उसे कौन दास बना सकता है?

# धर्म

- धर्म भगवान तक पहुंचने का सेतु है. हमारा सबसे बड़ा धर्म आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना है.
- धर्म तो जुदा-जुदा रास्ते हैं, जो एक ही जगह जा कर मिलते हैं. अगर हम एक ही मकसद (ध्येय) तक पहुंचे तो अलग-अलग रास्तों पर चलने में क्या नुकसान है.
- धर्म की शक्ति विघटनकारी होने के बजाय संयोजक होनी चाहिए.
- धार्मिक स्थानों का धन यदि राष्ट्र-निर्माण में लगे तो इससे अच्छा काम और क्या हो सकता है?
- मुझे अधिकार हो तो मैं 'सदाव्रत' को बंद करा दूं और केवल ऐसे व्यक्ति को भोजन दूं, जो ईमानदारी से उसके लायक मेहनत कर चुका हो.
- धर्मस्थान के नाम पर भारत भर में जो भंडार पड़े सड़ रहे हैं, वे धर्मस्थान नहीं, धोखे की चीजें हैं. ये भ्रष्टाचार के केंद्र बन गये हैं.
- व्यवहार में जो काम न दे वह धर्म कैसे हो सकता है?
- जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं ऐसे ही दूसरे धर्म को दें. मात्र सहिष्णुता पर्याप्त नहीं है.

- धर्म की साधना का उपाय धर्माचरण करना है, भजन गाना और कीर्तन करना भर नहीं.
- मैं धर्म से भिन्न राजनीति की कल्पना नहीं कर सकता. यहां धर्म का अर्थ कट्टरपंथ से नहीं है, उसका अर्थ है - विश्व की एक नैतिक सुव्यवस्था!
- जिसने अपना धर्म खोया, उसने सब खोया.
- वृक्ष के मूल की तरह धर्म का मूल एक है, लेकिन उसमें अनगिनत पत्ते जगे हैं.
- राजा या रंक हरेक अपने धर्म का चौकीदार होता है. इसमें हर्ष क्या, शोक क्या?
- जो धर्म यंत्रवत बनता है, वह धर्म नहीं कहा जा सकता.
- जहां धर्म है, वहां अहंकार कैसा?
- मैं देश-प्रेम को अपने ही धर्म का एक हिस्सा समझता हूं.
- गरीबों के लिए रोटी ही अध्यात्म है.
- मैं गीता को आत्मा का शब्दकोष मानता हूं.

# मातृभाषा : हिंदी

- मातृभाषा के विकास के लिए अंग्रेजी भाषा की जानकारी की नहीं, मातृभाषा से प्रेम की, उसके प्रति श्रद्धा की जरूरत है.
- भाषा जातियों के गुण-कर्म के अनुरूप बनती है.
- मातृभाषा द्वारा जन जागृति करने से हर काम में नयापन दिखाई देता है.
- विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देने की पद्धति से अपार हानि होती है.
- मां के दूध के साथ जो संस्कार और मीठे शब्द मिलते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए, वह विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देने में टूट जाता है.
- संस्कृत एक ऐसी भाषा है, जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरसंचित ज्ञान भरा है. बिना संस्कृत पढ़े कोई अपने को पूर्ण भारतीय नहीं बना सकता.
- हिंदी ही हिंदुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है, यह बात निर्विवाद सिद्ध है.
- बंगला, मराठी, उड़िया, गुजराती, पंजाबी, सिंघी, तेलुगु सहित अन्य हिंदुस्तानी भाषाएं हिंदी की बहनें हैं.

- हमारा देशी काम और व्यवहार हिंदी में प्रारंभ नहीं हो पाया, इसका कारण हमारी भीरुता, अश्रद्धा और हिंदी भाषा के गौरव का अज्ञान है.
- उर्दू को मैं हिंदी की ही एक शैली मानता हूं.
- यदि दक्षिण के प्रांतों में हिंदी न अपनाई गई तो यह देश का दुर्भाग्य होगा और उनका भी.
- शब्दों का मनुष्य की तरह विकास होना चाहिए.
- अंग्रेजी भाषा द्वारा दी गयी शिक्षा ने मुट्ठीभर शिक्षितों और सर्वसाधारण के बीच बड़ी भारी खाई उत्पन्न कर दी है.
- हिंदी भाषा में जब तक सारा सार्वजनिक कार्य नहीं होगा तब तक देश की उन्नति नहीं हों सकती.
- देशी भाषाओं की उपेक्षा का अर्थ है राष्ट्रीय आत्मघात.
- अंग्रेजी भाषा शिक्षा का माध्यम बन गयीं है जिससे देश को बड़ी भारी हानि पहुंची है.
- हालांकि अंग्रेजी भाषा की तुलना सोने की जंजीर से की जा सकती है फिर भी यह आपके हाथ-पांव को गुलामी के बंधन में बांधती है.
- हिंदी का प्रचार और प्रसार सहज और सरल है.

- मेरी हिंदुस्तानी चाहे जितनी दोषपूर्ण है, मैं उसी के माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचता हूं. अंग्रेजी के माध्यम से कभी नहीं; चाहे मेरी अंग्रेजी कितनी निर्दोष हो.

- जो मातृभाषा की अवगणना करता है वह अपनी माता की करता है.

# छात्र : शिक्षा : ज्ञान

- मै उच्च शिक्षा उसी को कहूंगा जिसे पाकर मनुष्य विनम्र, परोपकारी, सेवाभावी और कार्यतत्पर बन जाये.
- ऐसी शिक्षा बुनियादी शिक्षा प्रणाली द्वारा ही हो सकती है, जिससे बालक के शरीर, मन और आत्मा का पूरा विकास हो.
- वास्तविक शिक्षा विदेशी भाषा के माध्यम से हो ही नहीं सकती.
- मेरा विश्वास है कि बुद्धि का सच्चा विकास उस शिक्षा द्वारा होना चाहिए जिसमें शरीर के अंगों - हाथ-पांव, आंख, कान, नाक आदि का व्यायाम हो.
- अशिक्षितों के लिए हिंदुस्तान महज भूगोल का एक शब्द है. इस अज्ञानता को प्रौढ़ शिक्षा से मिटाना होगा.
- एक शास्त्र का ठीक अभ्यास करने से दूसरा सुलभ होता है.
- विद्यार्थियों को दलबंदी वाली राजनीति में कभी भाग नहीं लेना चाहिए.
- पाठशाला में पूरी शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए.
- पश्चिमी देश जिस कार्य को हानि की आशंका के बिना कर सकते हैं, वह हमारे लिए विनाशकारी बन सकता है.

- स्कूल में जो शिक्षा मिलती है, वह उपयोगी नहीं होती.
- नन्हें बालकों को तो पहले अपनी प्राचीन परंपराओं को जानना चाहिए और उन्हें अपनाना चाहिए.
- जिसे न शांति है, न निश्चय, उसे ज्ञान कहां है!
- क्षमा मांगने का अर्थ है फिर से भूल न करने का निश्चय.
- अनुभव बड़ी से बड़ी पाठशाला है.
- अपनी अल्पता का दर्शन महान बनने का आरंभ है.
- कंठस्थ ज्ञान की इतनी कीमत है जितनी तोता के रामनाम की.
- कई चीज आदमी बोल कर करता है, कई मौन से और कई कार्य से.
- अंतरज्ञान अमूल्य वस्तु है. उसे हम बगैर मेहनत चाहते हैं. धन, कीर्ति आदि की कुछ कीमत नहीं पर उसके लिए हम सब कुछ देने को तैयार रहते हैं.

# राष्ट्र

- आप अपनी प्रांतीयता की भावना को, छोटे-छोटे झगड़ों को हिंद महासागर में डूबने दीजिए और प्रतिज्ञा कीजिए कि आप पहले भारतीय होंगे और अंत में भी भारतीय ही होंगे और भारत के लिए जियेंगे, भारत के लिए मरेंगे.
- आप तामिलनाडु बनाम आंध्र, गुजरात बनाम महाराष्ट्र या पंजाब आदि के भ्रम में डालने वाले नामों को भूल जाएं और केवल हिंदुस्तान और उसके वैभव का स्मरण रखें, आखिरकार दुनिया तो भारत को जानती है, उसके प्रांतों को नहीं!
- राज्य एक आत्माहीन मशीन है.
- घर की संभाल रखना भी देश-सेवा है.

# जाति

- अगर शादी एक ही जाति में है तो मेरे आशीर्वाद मत मांगना.
- मुझे विजातीय विवाह अच्छा लगता है.
- वास्तव में जाति के नाम से तो केवल मनुष्य की जाति है.
- सभी जाति के लोग भगवान की सृष्टि के सेवक हैं - ब्राह्मण अपने ज्ञान द्वारा, क्षत्रिय बाहुबल द्वारा, वैश्य वाणिज्य द्वारा और शूद्र अपने शरीर श्रम या सेवा द्वारा. फिर इनमें कोई ऊंच-नीच नहीं कहा जा सकता.
- जांत-पांत का ढकोसला हिंदू-संस्कृति की आरंभिक नहीं, बाद की देन है, जिसका खामियाजा हम आज भी उठा रहे हैं.
- दूसरी जाति के लोगों के साथ रोटी-बेटी का संबंध करने से किसी की जाति नहीं बदलती, क्योंकि वर्णाश्रम पेशे के आधार पर होता है न कि जन्म के.

# ट्रस्टीशिप

- जो ट्रस्टीशिप की भावना रखेगा, वह लोगों को दबाकर और उनका शोषण करके धन नहीं जमा करेगा.
- ट्रस्टीशिप की भावना उच्च चरित्र की निशानी है.
- पूंजीवाद को समाप्त करने का मेरा तरीका अलग है और वह ट्रस्टीशिप के ही सिद्धांत पर निर्भर है.
- मैं पूंजी और श्रम का मेल चाहता हूं.
- मैं वर्षों से मानता आया हूं कि संसार की संपत्ति भगवान की है और यदि किसी के प्रास अनुपात में अधिक धन है, तो वह उस धन का जनता की ओर से ट्रस्टी या अमानतदार है.

# व्यापार

- सच्चे मानों में व्यापार वही है, जिससे देश के उत्पादकों को लाभ हो.
- व्यापार किसी भी देश की समृद्धि का कारण होता है.
- जीवन की जितनी विधियां हैं, उनमें व्यापार एक उन्नत विधि है.
- व्यापार के बिना कोई भी देश उन्नत नहीं हो सकता.
- व्यापारी को सबसे बड़ी सुविधा यह मिलती है कि उसे विनम्र होने का प्रशिक्षण अपने आप मिल जाता है.
- सच्चा बनिया:वह है, जो सच्ची तौल तौलता है.

# स्त्री

- स्त्री को अबला कहना उसका अपमान है.
- जो स्त्री देश को तेजस्वी, निरोग और सुशिक्षित संतान भेंट करती है, वह भी सेवा ही करती है.
- स्त्री साक्षात् त्याग है.
- सांसारिक जीवन को स्त्रियां ही सुखमय बना सकती हैं.
- जीवन-योजना में स्त्रियों को अपने भाग्य-निर्माण का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरुषों को अपने भाग्य-निर्माण का है.
- एक खास उम्र के बाद पिता का असर पुत्र पर कम हो जाता है. परंतु मां अपना दर्जा कभी नहीं छोड़ती.
- जबतक हमारी स्त्रियां हमारे विषयभोग की सामग्री और रसोई करनेवाली न रहकर हमारी जीवन सहचरी, अर्धांगिनी, और सुखं-दुःख की साझीदार नहीं बनती, तबतक हमारे सारे प्रयत्न मिथ्या जान पड़ते हैं.
- महादेव के लिए पार्वती, राम के लिए सीता और नल के लिए दमयंती थी, वैसे ही जब हमारे लिए हमारी स्त्रियां होंगी, तभी हमारा उद्धार हो सकेगा.

- स्त्रियों की स्वतंत्रता का मार्ग सिर्फ शिक्षा ही नहीं है, बल्कि पुरुषों के रुख में परिवर्तन तथा तदनुरूप व्यवहार भी है.
- पुरुषों की तारीफ इसमें होगी कि उनसे अधिक योग्य नहीं तो उनके बराबर योग्य यदि महिला कार्यकर्त्ता मिल जाये, तो वे उन्हें अपना स्थान देंगे.
- स्त्री अबला नहीं है. वह कभी पुरुष से बलहीन नहीं है. इसलिए वह किसी पुरुष की दया न मांगे, न अपेक्षा करे.

# शराब

- शराब की आदत को एक बीमारी मानना चाहिए और उसी रूप में इसका इलाज भी करना चाहिए.
- शराब से बढ़कर मनुष्य का नाश करनेवाली कोई वस्तु नहीं हो सकती.
- क्या हमारे लिए यह शर्म की बात नहीं है कि हमारे बच्चे उस आमदनी द्वारा शिक्षा ग्रहण करें, जो शराब की बिक्री से होती है?
- स्थानीय स्वेच्छा पर छोड़ देने पर मद्यनिषेध सफल नहीं हो सकता.
- शराब और नशीले द्रव्य शैतान के दो हाथ हैं.

# संगठन

- संगठन आधुनिक युग का एक कारगर हथियार है.
- जहां वैधानिक शक्तियां काम नहीं कर पाती, वहां संघ और संगठन द्वारा सहज ही सफलता प्राप्त कर ली जाती है.
- संगठन के बिना न कोई आंदोलन सफल हो सकता है और न किसी अच्छे हेतु का परिणाम निकल सकता है.
- संगठन द्वारा छोटे-छोटे राष्ट्र भी बड़े-बड़ों को मात दे सकते हैं.
- संगठन अच्छे कार्यों के लिए हो तभी इस शब्द की सुंदर भावना कायम रह सकती है.

# साधु

- सत्य के दर्शन के लिए संतों का चरित्र पढ़ना और उसका मनन करना आवश्यक है.
- भारत के पचपन लाख साधु इस देश के लिए बेकार और कलंक हैं.
- यदि लाखों साधु जनता के सेवक बन जायें, तो देश के रचनात्मक निर्माण के लिए इतनी बड़ी फौज सहज ही प्राप्त हो सकती है.
- साधु लोग यदि अपने आलस्य को दूर कर मठों, धर्मस्थानों में लगा धन सार्वजानिक सेवा में खर्च करें, तो उनके विरुद्ध शिक्षितों में जो भावना है वह अविलंब दूर हो सकती है.
- साधु में यदि आध्यात्मिक निधि नहीं है, तो मानवता का कलंक है.

# अहिंसा

- हिंसा के मुकाबले में लाचारी का भाव आना अहिंसा नहीं, कायरता है.
- अहिंसा मानो पूर्णतः निर्दोषता ही है. पूर्ण अहिंसा का मतलब है प्राणि-मात्र के प्रति दुर्भाव का पूर्ण अभाव!
- अहिंसा एक महाव्रत है.
- मैं यह कहने का साहस करता हूं कि अगर हमारी अहिंसा वैसी न हुई जैसी कि होनी चाहिए, तो राष्ट्र को उससे बड़ा नुकसान पहुंचेगा.
- अहिंसा की मूलभूत शर्त प्रेम है, और शुद्ध, निःस्वार्थ प्रेम मन और शरीर की निष्कलंक शुद्धता के बिना संभव नहीं है.
- अहिंसा का परिणाम देर से निकलता है, हिंसा का शीघ्र निकल आता है.
- अहिंसा किसी भी रूप में निष्क्रिय नहीं है. वह तो वास्तव में "विश्व की सबसे सक्रिय शक्ति है." जब तक अहिंसा को खाली नीति के बजाए एक जीवित शक्ति, एक अलंध्य सिद्धांत के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा, वैधानिक या लोकतांत्रीय शासन एक दूर का स्वन ही रहेगा.
- विश्व की समस्याओं का समाधान सिर्फ प्रेम और अहिंसा द्वारा ही हो सकता है.

- अहिंसा कोई अंशों में स्वीकारने या नकारने की चीज नहीं है.
- अहिंसा एक सार्वभौमिक सिद्धांत है और विरोधी वातावरण से उसकी कार्यशीलता घट नहीं जाती. सच तो यह है कि उसकी उपयोगिता की परख तभी हो सकती है जबकि वह विरोध के बीच और उसके बाजवूद काम करती है.
- अहिंसा की गति गोकुल की गाय जैसी जानो. यह हमेशा गतिशील रहती है, लेकिन हमेशा धीमी चलती है.
- अंहिंसा प्रेम की पराकाष्ठा है.
- अहिंसा निर्बल और डरपोक का नहीं, वीर का धर्म है.
- बिना अहिंसा के सत्य की खोज नामुमकिन है.
- हिंसा दुष्ट तत्वों को एक करती है.
- सुषुप्त अवस्था में जिस चीज का नाम अहिंसा है, जागृतावस्था में उसी का नाम प्रेम है. प्रेम से द्वेष नष्ट हो जाता है.
- अहिंसा की परीक्षा हिंसा का सामना करने में होती है
- मेरी अहिंसा मुलायम रूई की नहीं बनी है.
- अहिंसक आदमी के लिए समस्त विश्व एक कुटुंब है.

# किसान

- जमीन का मालिक तो वही है, जो मेहनत करता है.
- किसानों को शहर के कृत्रिम जीवन और लकछक के मोह में नहीं पड़ना चाहिए. उनकी सादगी और सरलता ही उनका भूषण है.
- खेती एक ऐसी कला है, जिसका उत्पादन-कार्य अपने हाथों संपन्न होता है.
- बनिस्वत इसके कि गांव की खेती अलग-अलग सौ टुकड़ों में बंट जाये, क्या यह बेहतर नहीं है कि सौ कुटुंब सारे गांव की खेती सहयोग से करें?
- हिंदुस्तान के लोग अगर खेती की तरक्की न कर सके, तो वे और कोई भी काम नहीं कर सकते.

# स्वदेशी

- स्वदेशी के प्रति प्रेम ही नहीं, हमें अनुराग भी होना चाहिए.
- स्वदेशी में लगभग स्वराज्य की चाबी है.
- जो मेहरबानी करने के लिए खादी पहनते हो, वे मेहरबानी न करें. धर्म समझकर ही (खादी) पहने.

# समाजवाद

- समाजवाद की जड़ में आर्थिक समानता है.
- मेरी लड़ाई पूंजी से नहीं, पूंजीवाद से है.
- जो दो मुट्ठी खाता है, उसे चार मुट्ठी पैदा करना चाहिए.
- सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय की सिफारिश करता है.
- वंश से प्राप्त अमीरी में मेरा विश्वास नहीं है.
- जबतक असमानता बनी रहेगी, चोर भी बने रहेंगे.
- दरिद्रता का इलाज औद्योगीकरण नहीं है.
- शोषक अपनी कब्र आप खोदता है.
- मैं धन का केंद्रीकरण कुछ के नहीं, सबके हाथों में चाहता हूं.
- समानता की मुख्य चाबी है आर्थिक आजादी.
- मैं प्रमुख उद्योगों के राष्ट्रीयकरण में विश्वास रखता हूं.
- समाजवाद के अनुसार राजा और किसान, धनाढ्य और गरीब, मालिक और नौकर सब समान स्तर के हैं.
- समाजवाद के बारे में मेरा यह विचार है कि हम सब बराबर या समान रूप में पैदा हुए हैं और हमें समान अवसर प्राप्त होने का अवसर मिलता चाहिए.

- मैं जमींदारों और अन्य पूंजीवादियों के विचार अहिंसक रीति से बदलने की आशा रखता हूं.
- प्रतिक्षण अनुभव होता है कि समता के फल मीठे होते हैं.

# अनुशासन

- अनुशासन विपत्ति की पाठशाला में सीखा जाता है.
- अनुशासन और संयम हमें पशुओं से अलग करते हैं.

# पत्रकारिता

- यह दुर्भाग्य की बात है कि आज समाचार पत्र औसत आदमी के लिए शास्त्रों से अधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं.
- समाचार पत्र का उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि लोक-भावना को समझकर उसकी अभिव्यक्ति की जाये.
- पत्रकारिता एक सुंदर कला है, पर आज इसका दुरुपयोग बहुत होता है. उसमें लोकहित का ध्येय कम होता जा रहा है.
- पत्रकारिता का मुख्य ध्येय होना चाहिए सेवा.
- पत्रकारिता लोकमत बनाने का एक साधन है.
- देश में जैसे अखबार निकल रहे हैं, मेरा बस चले तो उन सबको बंद करा दूँ.
- राज्य जो गलतियां कर रहा हो, उसका जिक्र पत्रकारिता का आवश्यक अंग है.
- समाचार पत्रों के अस्तित्व से, हानि और लाभ होने की समान संभावना है.
- अखबार पढ़ना आजकल मुसीबत है. सही खबर मिलती नहीं है.
- लोकसेवा करनेवाले संपादक को मौत का डर छोड़कर चलना चाहिए.

# पंचायत राज

- पंचायत के तहत हमारे गांव बड़े-बड़े काम कर सकते हैं.
- गांववालों का उद्धार तो पंचायत-राज द्वारा ही हो सकता है.
- पंचायत भारत की प्राचीनतम संस्था है, इसलिए उसका फिर से प्रचलन देश में कोई नई बात नहीं होगी.
- भारत जैसे विशांल और गांवों में फैले जनसमूह का कल्याण पंचायतों द्वारा बहुत अच्छे ढंग से हो सकता है.
- पंचायत-राज के अंतर्गत सभी क्रियाशीलताएं सहकारी पद्धति पर आधारित होनी चाहिए.

# क्रांति

- क्रांति तो युगों बाद आती है और वह मनुष्य को सजग करने, सुधारने आती है.
- क्रांतिकारी की प्रशंसा मैं तभी करूंगा, यदि वह अहिंसक हो.
- राष्ट्रों की प्रगति विकास से भी हुई और क्रांति से भी. दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं.
- क्रांतियां अकस्मात नहीं होतीं.

# सत्य

- सत्य की कोई सीमा नहीं होती.
- जिस काम को आप सच मानते हैं, वही करें. बाद में जगत् भी उसको सच ही कहेगा.
- जो सत्य जानता है, मन से, वचन से और काया से सत्य का आचरण करता है, वह परमेश्वर को पहचानता है.
- अगर हमारे जीवन में सच्चाई है, तो उसका असर अपने आप लोगों पर पड़ेगा.
- सत्य में प्रेम मिलता है, मृदुता मिलती है.
- एक वचन भी सत्य है तो काफी है. असत्य वचन कितने भी हों निकम्मे हैं.
- सत्य वचन की शक्ति वहां तक जाती है कि मनुष्य को स्वार्थ से परमार्थ में ले जाती है.
- आदमी प्रतिक्षण जागृत न रहे तो सत्य उसे मिल हीं नहीं सकता है.
- आकाश के नीचे मैदान में नानक पड़े थे. एक सुखी गृहस्थ ने कहा - नजदीक में सुंदर धर्मशाला है. वहां जाइए. नानक ने जवाब दिया- “मेरी धर्मशाला सारी पृथ्वी है, आकाश उसका छप्पर है”. नानक के ये शब्द मुझे अच्छे लगते हैं.

- सत्य एक विशाल वृक्ष है. उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते दिखाई देते हैं.
- हमारा राष्ट्र सच्चे अर्थ में आध्यात्मिक राष्ट्र उसी दिन होगा जब हमारे पास सोने की अपेक्षा, सत्य का भंडार अधिक होगा, धन और शक्ति के प्रदर्शन की अपेक्षा निर्भगता अधिक होगी. और अपने प्रति प्रेम की अपेक्षा, दूसरों के प्रति उदारता अधिक होगी.
- जब तुम्हें कोई झूठा कहें या मुखालिफत करे तो गरम मत हो जाओ. शांति से अपनी बात कहना है तो कह दो, शायद मौन सबसे बेहतर हैं. किसी के झूठ बताने से तुम झूठे नहीं बनते, अगर तुम सच्चे हो.
- जो हमेशा सत्य के पथ पर ही चलता है, वह कभी गिरता नहीं.
- वहम और सत्य साथ नहीं चल सकते.
- सत्य के साथ दृढ़ता होनी ही चाहिए.
- जीना झूठ है; मृत्यु सही है, निश्चित है.
- पंचों की वाणी परमेश्वर की वाणी होती है.
- “हर एक को अपनी मुक्ति स्वयं ही पानी है” – यह बात इस लोक के बारे में उतनी ही सच है जितनी परलोक के बारे में.

# उपवास

- उपवास शारीरिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आवश्यक है.
- उपवास मन और शरीर की शुद्धि के लिए है. उसका अन्य रूप में दुरुपयोग नहीं होना चाहिए. वह सत्याग्रह-शास्त्र का अंतिम और अमोघ अस्तर है.
- सच्चा उपवास इंद्रियों का दमन करता है और उस हद तक आत्मा को मुक्त करता है.
- प्रार्थना के साथ उपवास के लगातार प्रयत्नों द्वारा आत्मसंयम का सुफल प्राप्त होता है.
- उपवास सत्यशोधन का साधन तो है ही, वह शरीर-शोधन का उपाय भी है.
- उपवास का धमकी के रूप में प्रयोग करना बुरा है.
- अगर हम हफ्ते में एक दिन या पखवारे में एक दिन उपवास करें, तो शरीर का संतुलन कायम रख सकते हैं.

# मनुष्य

- अपने दो पांवों जैसे घोड़े हैं कहां?
- मनुष्य ईश्वर को पूजे और मनुष्य का तिरस्कार करे, यह बनने लायक नहीं है.
- मनुष्य की सच्ची पहचान हार्दिक विनय से होती है.
- विद्या वही है जिससे मनुष्य अपने को पहचाने.
- भूल करना मनुष्य का काम है और काम है उसे सुधारना भी.
- मनुष्य का सच्चा शिक्षक वह स्वयं ही है.
- डूबता आदमी दूसरे डूबते को नहीं बचा सकता.
- मनुष्य को मनुष्य का सहारा चाहिए.
- मनुष्य दो हाथ होने की वजह से ही मनुष्य नहीं हो जाता.
- जो मनुष्य श्रद्धा और दृढ़ निश्चय रखता है उसे दुनिया में निराश होने का कोई कारण नहीं होता.
- मनुष्य बहुधा यह नहीं जानता कि कौन मित्र है और कौन शत्रु!
- इंसान साथ ही साथ रहने के लिए पैदा हुआ है.

- जिसका संपूर्ण व्यक्तित्व ईश्वर से ओतप्रोत है, उसे कभी अंधकार का अनुभव नहीं होना चाहिए.
- यह देह केवल परमार्थ के लिए मिली है.
- कोई मनुष्य इतना बुरा नहीं होता कि सुधर ही न सके.
- मनुष्य को अपने दोषों का नहीं, गुणों का चिंतन करना चाहिए.
- जीवन अर्थहीन कोलाहल और आवेश की एक भूलभुलैया मात्र रह जायेगा... जब उद्देश्य नहीं हो तो.
- पशुओं की आत्मा सदा सुप्त रहती है, मनुष्य की सदा जागृत.

# प्रेम

- अगर जीवन की विधि में प्रेम न हो तो मृत्यु में जीवन न दिखाई देता.
- जहां प्रेम है, वहां परमात्मा है.
- शुद्ध प्रेम के लिए संसार में कोई बात असंभव नहीं.
- दरिद्र वह है जिसमें शुद्ध प्रेम की बूंद तक नहीं.
- प्रेम ऐसी जड़ी-बूटी है कि कट्टर दुश्मन को भी मित्र बना देती है.
- अगर मेरा प्रेम तभी तक रहता है, जब तक अपने मित्र पर मुझे विश्वास है, तो उसकी क्या कीमत? इतना तो चोर भी आपस में करते हैं, परंतु विश्वास का रिश्ता टूटते ही वे एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं.
- विश्वास के जवाब में विश्वास या प्रेम के जवाब में प्रेम, विश्वास या प्रेम कहलाने के लायक नहीं. सच्चा प्रेम वह है, जो घृणा करने वालों से भी हो. अपने पड़ोसी पर अविश्वास होते हुए भी उससे प्रेम करें.
- भय के सिवाय प्रीत होती नहीं है, ऐसा लौकिक कथन है. यह गलत है. सही यह है कि जहां भय हैं, वहां सच्ची प्रीत होती ही नहीं.
- निर्बल मनुष्य प्रेम नहीं कर सकता. प्रेम तो शूर ही दिखा सकते हैं.
- प्रेम वही है जो मतभेदों का झोंका बर्दाश्त कर सके.

- अपने मन को मंदिर बनाओ, उसमें प्रीति बसाओ.
- अगर ध्यान से देखे तो पृथ्वी पर स्वर्ग छाया हुआ है, आकाश में नहीं.
- मनुष्य अपने मित्रों के लिए, अपने प्राण देने से अधिक प्रेम नहीं दिखा सकता.
- माता-पिता कभी भी बच्चों को धमकी नहीं देते, केवल सलाह देते हैं.

# स्वास्थ्य + आहार

- विकार-मात्र की जड़ विचार में है. इसलिए विचारों पर हमें काबू पाना चाहिए.
- मन को कभी खाली रहने ही न दिया जाये. उसे अच्छे और उपयोगी विचारों से पूर्ण रखा जाये.
- आलस्य मात्र विकार का पोषक है.
- जैसा आहार, वैसा ही आकार.
- जो स्वाद को नहीं जीत सकता, वह कभी जितेन्द्रिय नहीं हो सकता.
- मनुष्य को युक्ताहारी और अल्पहारी बनना चाहिए. शरीर आहार के लिए नहीं, आहार शरीर के लिए है.
- शरीर अपने आपको पहचानने के लिए मिला है. अपने-आपको पहचानना अर्थात् ईश्वर को पहचानना है.
- सभी खुराक औषधि के रूप में लेनी चाहिए, स्वाद की खातिर नहीं.
- प्राकृतिक इलाज सबसे सस्ता, कारगर और हमारे देहातों के लिए अनुकूल उपचार है.
- बीमारीमात्र मनुष्य के लिए शर्म की बात होनी चाहिए.

- आश्चर्य है वैद्य मरते है, डॉक्टर मरते हैं. उनके पीछे हम भटकते हैं. लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा जिंदा रहता है और अचूक वैद्य है, उसे हम भुला जाते हैं.
- जब तक शरीर, मन और आत्मा के बीच मेल नहीं होता है, कुछ भी काम सीधा नहीं बनता है.

# लोकतंत्र

- लोकतंत्र में बड़ी प्रचंड शक्ति है.
- लोकतंत्र और हिंसा का मेल नहीं बैठता.
- अदालतें राजनीतिक प्रभाव से अछूती नहीं होती.
- जो बात व्यक्ति पर लागू होती है वही समाज पर भी लागू होती है.
- सरकार और लोगों का संबंध बाप और बेटे जैसा है, गुलाम और मालिक जैसा नहीं.
- शासकों को प्रजा या जनता की भाषा सीख लेनी चाहिए.
- न्याय में उदारता की जितनी जरूरत है उतनी ही उदारता में न्याय की है.
- कानूनपालक प्रजा होने का सच्चा अर्थ यह है कि हम सत्याग्रही प्रजा हैं, लेकिन जो कानून हमें अच्छे नहीं लगते हों, उन्हें मानने की शिक्षा तो मर्दानगी को बट्टा लगाने वाली है, धर्म विरुद्ध है, गुलामी की हद है.
- मानवजाति आज निर्णायक स्थिति में आ पहुंची है. उसे जंगल के कानून और मनुष्यता के कानून के बीच चुनाव करना है.
- स्वराज्य जागृत ज़नता के ही लिए है, निद्राग्रस्त और अज्ञानी जनता के लिए नहीं है.
- लोगों की इच्छा के बिना उन पर शासन करना अंसंभव है.

# शांति

- भीड़ में ही हमारे लिए एकांतवास है.
- शांति का सच्चा आधार तो अपने ऊपर ही है.
- युद्ध में फंसी हुई दुनिया शांति के अमृत की प्यासी है.
- जब हमारा मन शांत है तब हमें सब शक्ति भीतर से मिलती है और वह अमोघ होती है.
- बगैर भीतर की शांति के बाहरी शांति कुछ काम की नहीं है.

# सेवा

- सेवा के दाम नहीं लिये जा सकते.
- हर सच्ची सेवा में ही उसकी मान्यता निहित होती है.
- सेवा का क्षेत्र तो उतना ही विशाल है जितनी विशाल पृथ्वी है.
- देशभक्तों की एकमात्र महत्वाकांक्षा सेवा हो.
- जब हम जानते हैं कि यमराज हमें कल ले जायेगा तो हमें क्या हक है कि हम जो आज कर सकते हैं सो कल करें?

# सुख

- सुख की लालसा सच्ची व्याधी है, दुःख उसका उपचार है.
- नानक कहते हैं, "जो देते हो वह तुम्हारा है, जो रखते हो वह तुम्हारा नहीं है."
- उम्दा ख्याल खुशबू जैसा है.
- आदमी अपना दुख हंस कर भूल सकता है, रो कर बढ़ाता है.
- अगर सुख के पीछे पड़े तो सुख दूर भागता है. सच्चा तो यह है कि सुख भीतर से ही मिलता है. कोई सौदा करने की चीज नहीं है कि हम बाहर से मोल लें.
- जो मनुष्य सबको खुश रखना चाहता है, वह किसी को खुश नहीं करेगा.
- यदि हमें दुःख में से सुख प्राप्त करना है तो हमें दुःख सहन करने चाहिए.

# सभ्यता

- किसी देश की सुव्यवस्था की पहचान यह नहीं है कि उसमें कितने लखपति रहते हैं, बल्कि यह है कि जनसाधारण का कोई भी व्यक्ति भूखों तो नहीं मर रहा है.
- हमारी सभ्यता में पश्चिमी अतिशयता को स्थान नहीं है.
- भारतीय सभ्यता का प्रधान आधार आध्यात्मिक बल है, वह भौतिक बल से कहीं बढ़-चढ़ कर है.
- हम पाश्चात्य सभ्यता के ज्वर से ग्रस्त हैं.
- सभ्यता तो आचार व्यवहार की वह रीति है, जिससे मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन करे.

# दोष

- दूसरों के (विरोधियों) ही दोष देखने से यह भय रहता है कि कहीं दोषद्रष्टा खुद उस दोष का शिकार न बन जाये.
- दूध में जहर है तो हम दूध को फेंकते हैं. उसी तरह अच्छे के साथ पाखंड रूप जहर है तो उसे फेंको.
- जैसे हमारी पीठ दूसरा आदमी ही देखता है, हम नहीं, ऐसे ही हमारे दोष भी हम नहीं देखते हैं.
- जिसका वर्तन पशु जैसा है, वह पशु से बदतर है. पशु का पशुत्व उसके लिए स्वाभाविक है, मनुष्य का नहीं.
- मनुष्य की आदत ऐसी है कि वह अपने दोषों को भूल कर दूसरों के देखता है, और बाद में निराशा ही रह जाती है.
- अवगुण अंधेरे में ही फैलता है, प्रकाश में गायब हो जाता है.
- अगर कोई झूठी बात एक बार फैला दी जाये, तो उसका असर बहुत देर तक बना रहता है.
- मनुष्य का विकास मुख्यतः दुख से और दुख से ही होता है. इसलिए दुख से दुख न मानना.
- जिसकी आंख एक कहती है, जीभ दूसरी, हाथ में तीसरी चीज है वह घर फूटा है, निकम्मा है.

- जो मनुष्य क्रोध का कारण मिलते हुए भी क्रोध नहीं करता है, उसी ने ही क्रोध पर जय पाया है.
- एक भी मिनट फिजूल जाता है सो वापस नहीं आता, यह बातं जानते हुए हम कितने मिनट गंवाते हैं?
- मिथ्या ज्ञान से हम हमेशा डरते रहें, मिथ्या ज्ञान वह है जो हमको सत्य से दूर रखता है या करता है.
- ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिससे दोष न हो, और ऐसा कौन है जिसे क्षमा की आवश्यकता नहीं है?
- किसी का ऐब निकालना एक बात है, उसे साबित करना दूसरी!
- थोड़ा-सा झूठ भी मनुष्य का नाश करता है जैसे दूध में एक बूंद जहर!
- बहुत गैरसमझ की जड़ अविश्वास में होती है, बहुत अविश्वास की जड़ में भय होता है.
- स्वार्थ हमेशा हमें चिंताग्रस्त करता है.
- एक चोरी करता है, एक चोरी में मदद करता है, एक चोरी का इरादा करता है, तीनों चोर हैं.
- जो मैं करता हूं वह छोटा दोष है और दूसरे करते हैं वह बड़ा दोष है, ऐसा माननेवाला अज्ञान कूप में पड़ा है.

- अपने गुण आप देखें और उसकी स्तुति दूसरों से करें, इससे बढ़कर नीचता कैसी होगी?
- दूसरे के दोष ही देखना, अपने गुणों को देखने से भी नीच है.
- विवेक के विरुद्ध जाना धृष्टता है.
- धधकती ज्वाला के समक्ष निष्क्रियता अक्षम है.
- जो डरता है, संसार उसे ज्यादा डराता है. इसलिए डर मात्र को अगर तू समुद्र में फेंक दे तो अच्छा हो.
- सही चीज के पीछे वक्त देना हमको खटकता है, निकम्मी के पीछे जाते हैं और खुश होते हैं.
- जो मनुष्य अपने दुखों को गाता है वह उसे चौगुना करता है.
- थक कर बैठ जाना तो पशु की स्थिति है.

# परिश्रम

- लगन से, निराशा के शिशिर को क्षणभर में आशा के वसंत में परिवर्तित किया जा सकता है.
- निश्चल सफलता किसी को पूरी तरह से जीत सकती है.
- आदमी अगर निकम्मी बात छोड़े और काम की थोड़े-से-थोड़े शब्दों में कहे तो बहुत समय अपना और दूसरों का बचा लेता है.
- अगर प्रवाह के विरुद्ध चलना है, तो आवश्यक शक्ति का विकास करना होगा.
- जो जीवन के सुर में चलता है, उसे कभी थकान नहीं होगी.
- परिवर्तन की गति ही प्रगति है और उसी में हमारी है उन्नति है.
- जो मनुष्य किसी एक चीज पर एक निष्ठा से काम करता है वह आखिर सब चीज करने की शक्ति हासिल करेगा.
- केवल स्वणदर्शी के प्रयत्न का असफल होना निश्चित है.

# मौन

- चिल्लाने का भी एक उचित समय होता है जैसे कि मौन का होता है. दोनों का पालन अपने उचित समय पर होना चाहिए.
- ज्ञानी कहते हैं कि मौन से हम अपनी आत्मा के दर्शन के योग्य बनते हैं और हमारा बाहरी वर्तन अंतर के साथ मिलता है.
- बोलना या नहीं ऐसा संशय हो तब मौन ही बोलने का स्थान लेता है.
- मनुष्य जितना बोलकर बिगाड़ता है, उतना खामोशी से कभी नहीं.
- खामोशी, खामोशी नहीं है जो डर के मारे होती है.
- जब तक विचार निश्चित न हों, तब तक मौन रहना चाहिए.

# गुण

- हमें गुणग्राही होना चाहिए.
- विनय से लाभ होता है और उद्दंडता से हानि होती है.
- जिनके विचार हमारे विचारों से नहीं मिलते उनका न तो बहिष्कार किया जाना चाहिए और न तिरस्कार.
- जब हम अपने दोषों को पहाड़ के समान मानें और दूसरों के पहाड़ जैसे दोषों को भी रजकण के समान मानें, तभी मेल बैठेगा.
- त्याग ही सच्चा भोग है.
- मान्यता है कि जो सुंदर है, जरूरी नहीं कि वह उपयोगी हो और जो उपयोगी है, वह सुंदर नहीं भी हो सकता. मैं यह दिखाना चाहता हूं कि जो उपयोगी है वह सुंदर भी हो सकता है.
- अपने में विश्वास रखो तो तुम पूर्ण बनोगे.
- आवेश शांत होने पर जो काम किया जाता है, वही फलदायी होता है.
- आदर्श का ध्यान करने से उसकी विशालता नहीं बढ़ती, गहराई अवश्य बढ़ती है.

- नियम है कि यदि किसी बच्चे को भी अधिकार सौंपे गये हों तो सबका कर्तव्य है कि उस बच्चे के आदेशों का है अक्षरशः पालन करें.
- जैसे पानी का स्वभाव ही नीचे जाने का है, ऐसे ही जो स्वभाव से नम्र हैं, उसकी नम्रता पानी की सी जगत को लाभदायक होती है.
- वही चीज एक निगाह से देखें तो गुस्सा आता है; दूसरी निगाह से देखें तो हंसी आती है. क्या अच्छा यह नहीं कि हम न गुस्सा करें, न हंसी!
- खूबी अकेले जूझने में है- विरोधी एक हो या अनेक!
- नम्रता का ढोंग नहीं चलता, न सादगी का.
- आप भले तो जग भला!
- मुझे सच्चा विरोध भी प्रिय है.

# विविध

- जहां कायर होंगे, वहां जालिम भी होंगे ही.
- मैं किसी अंधे व्यक्ति के मन में सुखद दृश्यों के देखने का उत्साह नहीं भर सकता, उसी प्रकार किसी कायर को अहिंसा धर्म भी नहीं सिखा सकता.
- अहिंसा वीरता की पराकाष्ठा है.
- पहले एक अरसे तक मेरे मन में कायरता का निवास था और उस अवधि में मन में हिंसा के भाव उठा करते थे. लेकिन जैसे-जैसे मेरी कायरता दूर होने लगी, मैं अहिंसा की भी कीमत समझने लगा.
- बुजदिली की दवा शारीरिक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि खतरों को झेलने की आदत डालना है.
- प्रतिष्ठित लोगों को दोष से मुक्त कर देने की प्रवृत्ति को कदापि प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए.
- मैं मृत्यु से पहले ही मरने में विश्वास नहीं रखता.
- उस जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं, जिसके बनाने की शक्ति हममें न हो.
- अपने को खोकर ही अपने को पाओगे.
- मतभेद रखना तंग करना नहीं है.

- जब तक संसार चलता रहेगा तब तक पांडवों और कौरवों का युद्ध भी चलता रहेगा.
- यह पेचीदा प्रश्न है: मनुष्य कहां तक अपने साथियों के साथ चले जब वह जानता है कि वे सचमुच अपने (उसके) नहीं हैं!
- जिसने अपनापन खोया, उसने सब खोया.
- संतुष्टि प्रयत्न में होती है, न कि प्राप्ति में.
- कर्तव्य के बाद अधिकार अपने आप चला आता है.
- प्राणों का मोह छोड़ने से ही जीवन का आनंद मिलता है.
- संयम में ही सुख है.
- यदि मुझमें सामर्थ्य होता तो मैं आज ही इस व्यवस्था को नष्ट कर देता.
- गुलाम तभी तक गुलाम है जब तक वह उसे स्वीकार करता है.
- जीवन विनाश के बीच भी टिका रहता है.
- मरने में मारने से ज्यादा बहादुरी हैं.
- अहंभाव मिटने से ही डर मिटता है.
- अपनी अपूर्णता अनुभव करना प्रगति का पहला कदम है.
- कानून से किसी को बदला नहीं जा सकता.

- स्वराज्य की चमक भारत के करोड़ों निरक्षरों तक पहुंचे.
- पुरुषत्व तो परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने में है.
- यह कितना दुखद है कि सुखी लोग गिनती के ही हैं!
- अपने पड़ोसी का ख्याल रखने में दुनिया की सेवा भी है.
- युद्ध-शास्त्र तथा स्पष्ट तानाशाही की ओर ले जाता है.
- मैं सिर्फ दिमाग को नहीं दिल को भी छूना चाहता हूं.
- हमें अपने परिवेश के अनुरूप अपना जीवन बनाना चाहिए.
- बहादुरी तलवार में नहीं है.
- छोटी-छोटी बातों ऐ ही हमारे सिद्धांतों की परीक्षा होती है.
- सच्चा सौंदर्य तो गुण में होता है.
- शोषण हिंसा का सार है.
- असत्य बड़े आकर्षक लिबास में आता है.
- हम धीरज खो दें तो हार जायेंगे.
- क्षमाशीलता की कोई सीमा नहीं है.
- आंतरिक शक्ति किसी भी शोषण को असंभव बना देती है.
- जन्म और मरण एक ही सिक्के के दो बाजू है.

- जाति और प्रांत की दोहरी दीवार टूटनी ही चाहिए.
- आदमी हमेशा अपूर्ण ही रहेगा.
- हम एक अत्यंत प्राचीन सभ्यता की संतान हैं.
- सच्चा हक वही है, जो कभी छीना न जा सके.
- जिसमें क्रोध है, उसमें विष है.
- जहां श्रद्धा और सरलता है वहां सफलता अवश्य मिलती है.
- संपूर्णता तो केवल प्रभुप्रसादी है.
- जिसका मन उसके वश में नहीं है वह दूसरों को अपने अनुशासन में रखने का विचार ही कैसे कर सकता है?
- अनेक बार तो हम भूलें कर के ही भूलों के बचना सीखते हैं.
- प्रयत्न करते हुए गिरेंगे, भटकेंगे तो फिर खड़े भी होंगे.
- एक अच्छी तरह सुधर जाए तो दूसरे भी सुधरते हैं.
- क्रोध से हमारी तरक्की नहीं होगी.
- शांति की चिंता करना सिपाही का काम नहीं है.
- हमारा ध्येय हृदय परिवर्तन है, जोर-जबर्दस्ती नहीं.
- एक की निःस्वार्थ सेवा में अनेकों की सेवा आ जाती है.

- हर पराजय मुझे नम्र बनाती है.
- तुम्हारा घर कहीं नहीं है और सर्वत्र है.
- अधिक से अधिक स्पष्टवादिता मित्रता की सच्ची कसौटी है.
- मन दो प्रकार के हैं- एक नीचे ले जाता है, दूसरा ऊंचे!
- जिस पथ पर सत्य ले जाए, उसी पथ का अनुसरण करना चाहिए.
- जब सब करेंगे तब हम करेंगे, यह न करने का बहाना है.
- वाणी-स्वातंत्र्य और नागरिकता के अधिकार ही स्वराज्य की जड़ हैं.
- कट्टरपन और असहिष्णुता सत्यान्वेषण में बाधक होते हैं.
- भाग कर हिमालय चले जाना तो कायरता है.
- मेरे लिए स्वराज्य का अर्थ है इंसाफ का राज!
- बच्चे बड़े हो कर मित्र बन जाते हैं और मित्र को तो हम सलाह ही दे सकते हैं.
- जहां राजनीतिक अन्याय नहीं रहता, वहां राजनीतिक अपराध बहुत विरल होते हैं.
- आप सांप्रदायिकता के विरुद्ध सांप्रदायिकता से नहीं लड़ सकते.
- मैं तो सत्संग का भूखा हूं.

- कोई चाहे कुछ कहे, उसका दुख नहीं मानें.
- गीदड़ से भाईचारा जोड़कर तो हम गीदड़ ही रह जाएंगे.
- समाज का झूठा डर ही मनुष्य को मारता है.
- हृदयपूर्वक किया गया काम संतोष और शांति देता है.
- जो जीना नहीं जानता वह मरना कैसे जाने?
- भारत की खुशहाली गाय और गोवंश की खुशहाली से जुड़ी हुई है.
- कौमें और उनके नेता दो अलग-अलग चीजें हैं.
- मुझे बच्चों के शरीर को दवाओं का घर बनाने से नफरत है.
- भक्ति तो सब कुछ भूलने पर ही उत्पन्न होती है.
- विचार ही कार्य का मूल है.
- गरीबों को तुच्छ माननेवाले अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं.
- अंधे राजा के न्यायालय भी अंधे ही होते हैं.
- जो न्याय चाहते हैं, उन्हें न्याय करना भी चाहिए.
- निराशा केवल अपनी कल्पना में बसती है.
- ताकत घोड़े की गति से जाती है और चींटी की गति से आती है.
- जो तेरे में नहीं होगा वह लोगों को तू कभी नहीं दे सकता.

- दांतों को जीभ की रक्षा की सलाह नहीं दी जाती.
- धैर्य और लगन जैसी दूसरी कोई चीज नहीं है.
- हम दूसरों का दोष न देखें, अपने ही देखें.
- मूल तत्व जानने का अर्थ तद्नुसार व्यवहार करना है.
- डरनेवाले को सभी डराते हैं.
- अपने सम्मान की रक्षा का इच्छुक सदा दूसरों का सम्मान करता है.
- पुस्तकों में लिखा सब कुछ वेद-वाक्य नहीं माना जा सकता.
- कथनी से करनी का प्रभाव कहीं अलग और अद्भूत होता है.
- दुर्बल आदमी संयोगवश की न्याय करता है.
- हम मेहरबानी नहीं, हक चाहते हैं.
- पशु-पक्षी, पेड़-पत्थर ऐसे मित्र और साथी हैं जो कभी धोखा नहीं देते.
- जो मनाने से नहीं मानता वह विवश होने पर हार मान जाएगा.
- काम तो स्वयं बोलता है.
- शहादत कभी बेकार नहीं जाती.
- जिन हाथों में कभी छाले न पड़े हों, वे किस काम के!

- हिंसा से हिंसा पैदा होती है.
- पूर्व की ओर जाने के लिए पश्चिम की ओर नहीं चलना चाहिए.
- सच्चा सौंदर्य तो गुण में होता है.
- दुख को भूल जाने से दुख मिट जाता है.
- पैसे से किसी की कीमत नहीं होती.
- आत्मविश्वास का अर्थ है अपने काम में अटूट श्रद्धा.
- कड़वी चीज मीठी बनाने से मीठी नहीं बनती.
- जरूरत से ज्यादा चीजें इस्तेमाल करना चोरी है.
- आत्मा की शक्ति को पहचानना ही आत्मज्ञान है.
- रोटी के लिए प्रत्येक मनुष्य को मजदूरी करनी चाहिए.
- हम पुरुषार्थ करें और परिणाम ईश्वर पर छोड़ दें.
- खोटे सिक्कों के ढेर में यदि एक भी सच्ची मोहर हुई तो उस ढेर की कीमत उस एक मोहर के बराबर होगी.
- मरने की हिम्मत रखना सबसे बड़ी बहादुरी है.
- लज्जा जेल जाने में नहीं है, बल्कि चोरी करने में है.
- जिद और आग्रह में बड़ा भेद है. जिद उसका नाम है जिससे हम अपनी बात दूसरों पर लादना चाहें. आग्रह उसका नाम है जिससे

हम अपने पर कोई चीज डालते हैं. उसका फल आता है कि दूसरे अपने आप उसे मानने लगते हैं.

- प्रतिज्ञा न करना बुद्धिमानी है, किंतु एक बार प्रतिज्ञा ले ली जाये तो उसका पालन अवश्य किया जाना चाहिए.
- अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम ऐसी किसी चीज का संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नहीं है.
- आर्थिक दृष्टि से जो जितना संपन्न होता है, ज्यादातर उसका नैतिक स्तर गया-गुजरा होता है.
- मेरी धारणा है कि आर्थिक उन्नति, वास्तविक उन्नति के विरुद्ध होती है.
- धनोपार्जन को लक्ष्य बना लेना, आदर्श से गिर जाना है.
- पाश्चात्य देश अपनी उन्नति का मापदंड रुपया, आना, पाई बनाये हुए हैं.
- क्या देखने में मैला नहीं मैला? सफेद में मैला थोड़ा-सा भी आवे तो हम नाराज होते हैं. काले में कितना भी मैल पड़े, उसकी परवाह ही नहीं.
- गंगा कब सूखेगी? जब अपने मूल को छोड़े तब. ऐसे ही, आत्मा जब परमात्मा से छूट जाये तब ही सूख सकती है.

- जो सचमुच भीतर से स्वच्छ है, वह बाहर से अस्वस्थ हो ही नहीं सकता.
- हस्तरेखा निकम्मी नहीं है, लेकिन उसको पढ़ने के प्रपंच में मत पड़ो.
- अनासक्ति की सच्ची कसौटी तब होती है जब किसी काम के लिए हमारे में आसक्ति पैदा होती है.
- जैसे बीज को फल देने में अपनी मुद्दत चाहिए, ऐसा ही कार्य के लिए है.
- पैसा परमेश्वर है, कहना गलत बात है और गलत सिद्ध हो चुकी है.
- सच्चाई यह है कि जैसे ही आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होती है, आत्मिक दिवालियापन भी सुनिश्चित हो जाता है.
- स्वार्थ को जब मनुष्य परमार्थ मानता है तब सियार को सिंह मानने जैसा करता है.
- हम एक ही समय में बुद्धिमान, संयमशील और क्रूर नहीं हो सकते.
- जो कुछ आज चला जायेगा, वह फिर कल आ जायेगा.
- मेरी नाव अज्ञात समुद्र में बह रही है. मुझे बीच-बीच में गहराई नापनी होती है.
- जो जीना नहीं चाहता है, वह मरना कैसे जाने!

- संगीत गले से ही निकलता है ऐसा नहीं - मन का संगीत है, इंद्रियों का है, हृदय का है!
- मनुष्य जब एक नियम तोड़ता है तो दूसरे अपने आप टूट जाते हैं.
- जैसे पिंड में ब्रह्मांड है ऐसे देहात में हिंदुस्तान है.
- पेड़ की परीक्षा उसके फल से होती है.
- मृत्यु एक स्वागतयोग्य मुक्ति का साधन है.
- मेरी धारणा है कि इस्लाम धर्म की उन्नति का कारण मुसलमानों की तलवारें नहीं, मुसलमान फकीरों की आत्माहुति है.
- जब हम अपने मूल से जुदा होते हैं तब मरते हैं न कि आत्मा से शरीर जुदा होता है तब.
- अहंकाररूपी अंधकार, अंधकार से भी ज्यादा भयंकर है. इस अहंकाररूपी अंधकार से कैसे निकलें? रजवत् होने तक के नम्रतारूपी प्रकाश से.
- हम जिन्हें कठिनाइयां मानते हैं, वे अंततः हमारी अपनी ही पैदा की हुई होती हैं.
- अफवाह सुनना नहीं, सुनना तो मानना नहीं.

- ब्रह्मचर्य का अर्थ यहां मनसा, वाचा, कर्मणा इंद्रिय निग्रह! जो स्त्रीगमन नहीं करता हुआ मन से विकारमय रहता है, वह सच्चा ब्रह्मचारी न माना जाये.
- राजनीतिक स्थिति में शुद्ध साधनों द्वारा लाया हुआ परिवर्तन ही हमें उच्च मार्ग की ओर ले जा सकता है.

# सात सामाजिक पाप

- सिद्धांतविहीन राजनीति
- परिश्रमविहीन धनोपार्जन
- विवेकविहीन सुख
- चरित्रविहीन ज्ञान
- सदाचारविहीन व्यापार
- संवेदनाविहीन विज्ञान
- वैराग्यविहीन उपासना

यंग इंडिया (१९२५)

भारत की विशाल, मूक और भूखी जनता की आजादी को लड़ाई में तथा सत्य और अहिंसा को अभिव्यक्ति देने के प्रयत्न में मैं प्राण सन्नद्ध हूं... मैं तो जो हूं मूझे वही रहने दो.. अर्थात् भारत का और उसके माध्यम से मानवता का एक साधनारत सेवक!

- गांधीजी

* * *